PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 7, ISSUE 1

सामाजिक घटना - अर्थ एवं प्रकृति का अनुसंधान

डॉ. छाया आर. सुचक
समाजशास्त्र विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज विजयनगर
गुजरात भारत

मानव समाज मानवीय सम्बन्धों व सह-सम्बन्धों का एक अनोखा ताना-बाना है । हमारे समाज में साधु, शैतान, राजा, रंक, कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ, अपराधी, धर्मावतार आदि सभी साथ में रहते हैं । यहाँ पर निरक्षरता, अज्ञानता, कुसंस्कार, साम्प्रदायिक दंगे-फसाद, जातिवाद एवं प्रजातिवाद के घोर अन्धकार से लेकर शिक्षा-दीक्षा व ज्ञान का जगमगाता हुआ प्रकाश भी है । इन सभी को लेकर ही सामाजिक घटनाओं की प्रकृति का निर्धारण होता है । ये सामाजिक घटनाएँ ही वैज्ञानिकों के अनुसंधान एवं सर्वेक्षण होता है । ये सामाजिक घटनाओं का अर्थ एवं वास्तविक प्रकृतिक को समझना अति आवश्यक है ।

घटनाओं के प्रकार, अर्थ और विशेषताएँ

(Phenomena - Types, Meaning and Characteristics)

विज्ञान घटनाओं का अध्ययन है । अतः घटनाओं की प्रकृति वैज्ञानिक अध्ययन के आधारों को प्रभावित कर सकती है । यदि कोई घटना इस प्रकार की है कि उसमें किसी भी प्रकार की नियमितत्व (Regularity) का अभाव है तो यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक पद्धति से उस घटना का अध्ययन करना अत्यन्त कठिन होगा । अतः घटनाओं (Phenomena) की प्रकृति की जाँच कर लेना वैज्ञानिक के लिए आवश्यक हो जाता है । विश्व की समस्त

घटनाओं का सामान्य रूप से वर्गीकरण करें तो मोटे तौर पर इन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(1) प्राकृतिक घटनाएँ (Natural Phenomena)

(2) सामाजिक घटनाएँ (Social Phenomena)

(1) प्राकृतिक घटनाएँ (Natural Phenomena) – प्राकृतिक घटनाओं का तात्पर्य उन घटनाओं से होता है, जिनकी उत्पत्ति प्रकृति द्वारा होती है, जिनका नियन्त्रण प्रकृति के हाथ में है और जो भौतिक एवं स्थूल हैं । प्राकृतिक घटनाओं में (जिनमें भौतिक, रासायनिक, प्राणिशास्त्रीय, वनस्पति सम्बन्धी, अकाल, बाढ़, सूखा, तूफान आदि घटनाएँ भी सम्मिलित हैं) नियमिता, निश्चितता, मूर्तता, समानता, वस्तुनिष्ठता आदि गुण पाये जाते हैं, इसलिए इन घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन यथार्थ तथा निष्कर्ष विश्वसनीय होते हैं । यही कारण है कि आज हम प्राकृतिक या भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति को प्राकृतिक एवं भौतिक वस्तुओं पर उत्तरोत्तर मानवीय नियन्त्रण के रूप में स्वतः देख सकते हैं । अपने वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर मनुष्य ने प्रकृति पर बहुत-कुछ विजय प्राप्त कर ली है, अनेक रहस्यों को खोला है, असंख्य दुर्बोधों को उसने बोधगम्य बनाया है, अपनी धरती के रहस्यों को ज्ञाना है, शून्य को पहचाना है तथा दूर-नक्षत्र लोक में भी अपने ज्ञान के सन्देश को भेजा है । इस प्रकार आकाश, धरती, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी और समुद्र के अध्ययन ने उसके सम्मुख अनेक आश्चर्य जनक अनुभवों को उपस्थित किया है और अनेक रहस्यों को उद्घाटित कर उसे एक महान् शक्तिशाली नियन्त्रकः के रूप में सुप्रतिष्ठित किया है । प्राकृतिक घटाओं की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

(1) नियमितता,

(2) मूर्त स्वरूप,

(3) समानता,

(4) निश्चिक्तता, और

(5) वस्तुनिष्ठता ।

(2) सामाजिक घटनाएँ (Social Phenomena) : मानव ने प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित किया, पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों को ठीक-ठीक पहचाना, भौतिक दुनिया को अपने अधीन किया, अपने अनुसंधान व अध्ययन की विषय-वस्तु के रूप में धरती से आकाश तक गया परन्तु आश्चर्य जनक रूप से प्राकृतिक व भौतिक संसाधनों को अपने वश में करने वाला मानव स्वयं अपने ही समाज में सामाजिक सम्बन्धों के बारे में निश्चित नहीं है, स्वयं अपनी ही सामाजिक घटनाओं के बारे में उसका ज्ञान कुछ अधूरा-सा है ।

ऐसा आखिर क्यों ? इसका उत्तर यह है कि सामाजिक सम्बन्ध व घटनाओं में जटिलता, विविधता, परिवर्तनशीलता, व्यक्तिनिष्ठता, अमूर्तता और गुणात्मकता का अंश मौजूद होता है । सामाजिक घटनाओं का आशय उन घटनाओं से होता है, जिनकी उत्पत्ति का कारण सामाजिक, क्रियाएँ, व्यवहार तथा चिन्तन प्रक्रियाएँ होती है । दूसरे शब्दों में, सामाजिक घटनाओं का आशय व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित एवं संचालित करने वाले सामाजिक नियमों, प्रेरणाओं, प्रकार्यों, चिन्तन पद्धतियों आदि से होता है, जो कि वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का अंग होते हैं । इस प्रकार प्राकृतिक तथ सामाजिक घटनाएँ दोनों की प्रकृति एक-दूसरे से अलग है । दोनों के मध्य प्रकृति की भिन्नता ही विद्वानों के बीच विवाद का कारण है । विद्वानों के एक वर्ग का कहना है कि चूकि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति जटिलता, अनिश्चितता, परिवर्तनशीलता विचितता तथा रहस्यों से परिपूर्ण है । इसलिए इसका वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना संभव नहीं है, अतः सामाजिक नियमों तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन संभव नहीं है । इस विचारधारा के विपरीत दूसरे वर्ग के विद्वानों का विचार है कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा किया जा सकता है क्योंकि विज्ञान का सम्बन्ध किसी, विशेष विषय से न होकर उसमें प्रयुक्त होने वाली वैज्ञानिक पद्धतियों से होता है, अर्थात् वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग के माध्यम से ही यह पता लगाया जा कता है कि कोई भी विषय वास्तव में विज्ञान है अथवा नहीं । यह अवश्य है कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति जटिलता, परिवर्तनशीलता एवं अमूर्तता लिए होती है । किन्तु वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा इन जटिल विषयों को भी सुलझाया जा सकता है वास्तव में यह कार्य कठिन अवश्य है किन्तु असंभव नहीं है । सामाजिक घटनाओं की मुख्य रूप से निम्न विशेषताएँ हैं –

(1) अमूर्तता,

(2) गुणात्मकता,

(3) जटिलता,

(4) परिवर्तनशीलता,

(5) विविधता,

(6) व्यक्तिनिष्ठता, एवं

(7) अनिश्चितता ।

वैज्ञानिक अध्ययन का तात्पर्य पाँच विशेषताओं से बताया है -

(1) ज्ञान में वृद्धि,

(2) वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग,

(3) सामान्य नियमों का प्रतिपादन

(4) नियमों की व्यावहारिकता, तथा

(5) नियमों की सहायता से अध्ययन - क्षेत्र का विस्तार ।

यद इस द्रष्टिकोण से भी देखा जाए तो सामाजिक घटनाओं का अध्ययन पूर्णतया विज्ञान की परिधि में आता है । सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए ऐसी पद्धतियों तथा प्रविधियों को निरन्तर विकसित किया जा रहा है जिनकी सहायता से इन अध्ययनों को पक्षपात – रहित तथा वैज्ञानिक बनाया जा सके ।

सन्दर्भः

1. Lundberg, G.A., Social Research, P. 18
2. "...the laboratory method is only one general prcedue of accurate observation." - Gillin. J.L. and Gillin, J. P. Cultural Sociology, P. 15.
3. Alexender, Chester, "Is Sociology and exact Science ?" American Sociological Review, Vol. XI, P. 5.
4. उच्चतर सामाजिक अनुसंधान (शोध), सुनील गोयल, संगीता गोयल, RBSA Publishers 40, Chaura Rata, Jaipur.